वुज़ू, तयम्मुम एवं ग़ुस्ल (स्नान) का तरीका। 2

वुज़ू का तरीका।

दिल से वुज़ू की नीयत करे, ज़ुबान से नीयत के शब्द न बोले, फिर बिस्मिल्लाह" कहे, इसके पश्चात अपनी हथेलियों को धोए।

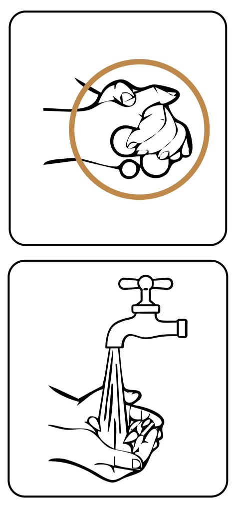

1

फिर अपनी दाहिनी हथेली में पानी ले और उससे कुल्ली करे "पानी को अपने मुँह में डाले तथा इसे मुँह में घुमाए" इस के बाद इसे अपने मुँह से बाहर फेंके, फिर अपने नथनों में पानी से इस्तिंशाक़ करे "अर्थात: पानी को नाक से ऊपर खींचे" फिर इस़्तिंस़ार करे "अर्थात: पानी को अपनी नाक से बाहर फेंके एवं बाएं हाथ की अपनी शहादत की ऊँगली (तर्जनी) एवं अंगूठे को अपनी नाक पर रखे"।

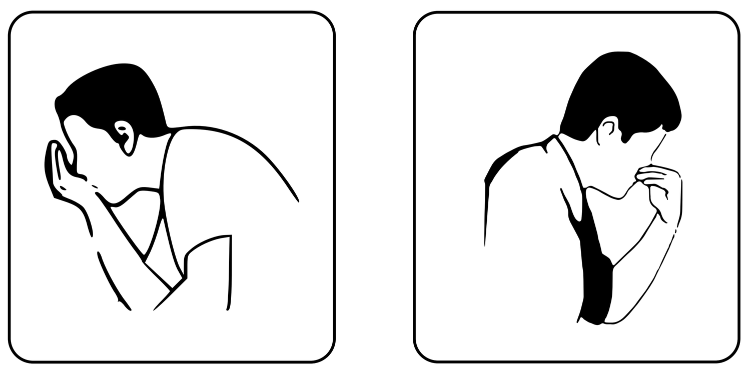

2

फिर अपने मुख को धोए "लंबाई में सिर की सामान्य बालों की रेखा से दाढ़ी और ठोड़ी के अंत तक एवं चौड़ाई में दोनों कानों के बीच तक"।

3

फिर अपने हाथों को उँगलियों की नोक से ले कर कोहनियों तक धोए, आरंभ दाहिने हाथ से करे तत्पश्चात बाएं हाथ को धोए।

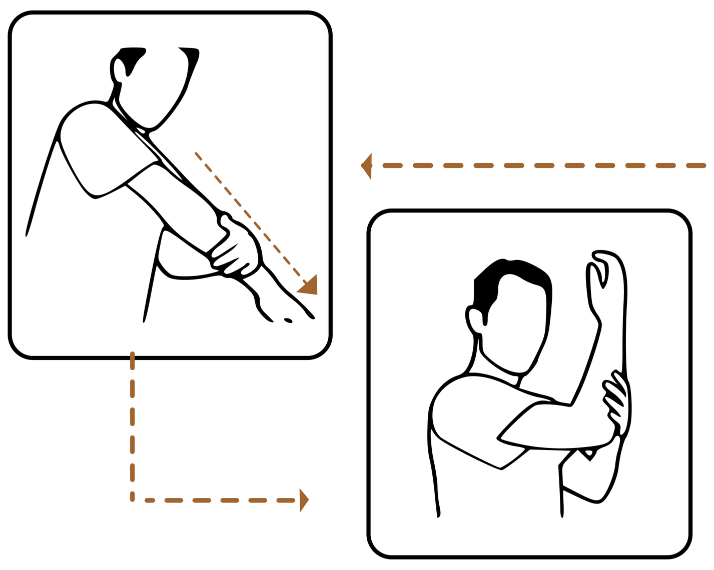

4

फिर अपने सिर का मसह करे, सिर के आरंभिक भाग से शुरू करते हुए अपने हाथों को पीछे गुद्दी तक ले जाए फिर उन्हें वापस अपने सिर के आरंभिक भाग तक लाए।

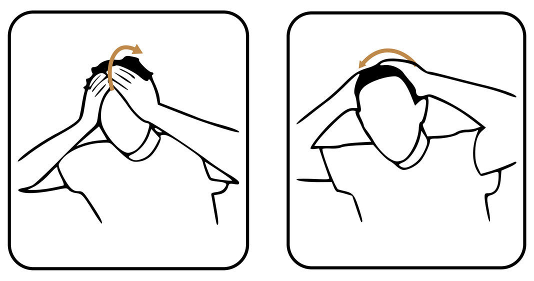

5

फिर वह अपनी तर्जनी (शहादत की ऊँगली) को अपने कानों के छेद में डाले एवं अपने अंगूठे के माध्यम से कान के ऊपरी भाग का मसह़ करे अर्थात पोंछे।

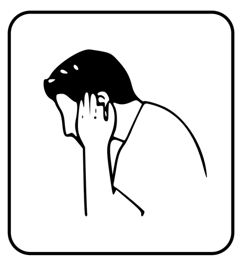

6

फिर वह अपने पैरों को टखनों समेत धोए।

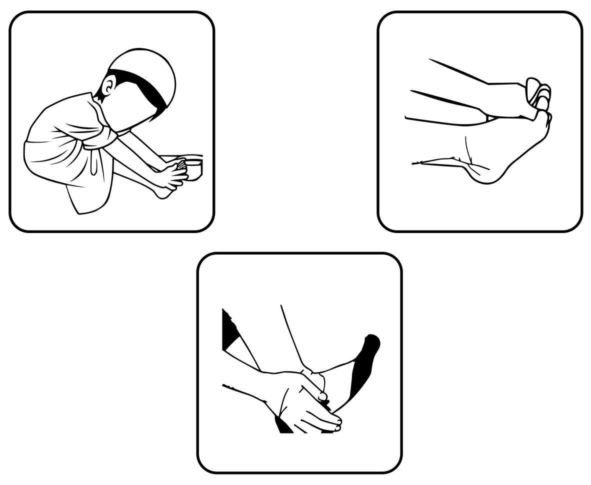

7

- मशरूअ एवं निश्चित मात्रा से अधिक करने का हुक्म ?

वुज़ू में निर्धारित मात्रा से अधिक करना जायज़ (उचित) नहीं है, जैसे तीन से अधिक बार धोना, या कोहनी के ऊपरी भाग अर्थात बाज़ू को धोना, या पैर की एड़ी के ऊपरी भाग को धोना, या गर्दन को पोंछना।

8

- वुज़ू से फ़ारिग़ होने के बाद यह दुआ पढ़े:

अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वह़दहु ला शरीका लहु, व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु, अल्लाहुम्मजअल्नी मिनत्तव्वाबीन वजअल्नी मिनल मुतत़ह्हिरीन)।

9

- वुज़ू को तोड़ने वाली चीज़ें :

1- अगवाड़े एवं पिछवाड़े से निकलने वाली चीज़, जैसे पेशाब, मल या पाद।
2- सो जाने के कारण या बेहोशी की वजह से सोचने-समझने की शक्ति का समाप्त हो जाना।
3- ऊंट का मांस खाना।

10

तयम्मुम का तरीका

तयम्मुम : पानी के द्वारा प्राप्त होने वाली पाकी एवं शुद्धि के विकल्प को कहते हैं, जब पानी अनुपलब्ध हो अथवा पानी प्रयोग करने पर हानि होने का भय हो तो इस स्थिति में शारीरिक अंगों को पाक एवं शुद्ध करने के लिए मिट्टी पानी का स्थान ले लेता है।

1

मन में तयम्मुम करने की नीयत करे, फिर बिस्मिल्लाह कहे, इस के बाद ज़मीन पर एक बार मारे, और अपनी हथेलियों से अर्थात हाथ के भीतरी भाग से अपने चेहरे एवं हथेली के ऊपरी भाग का मसह़ करे।

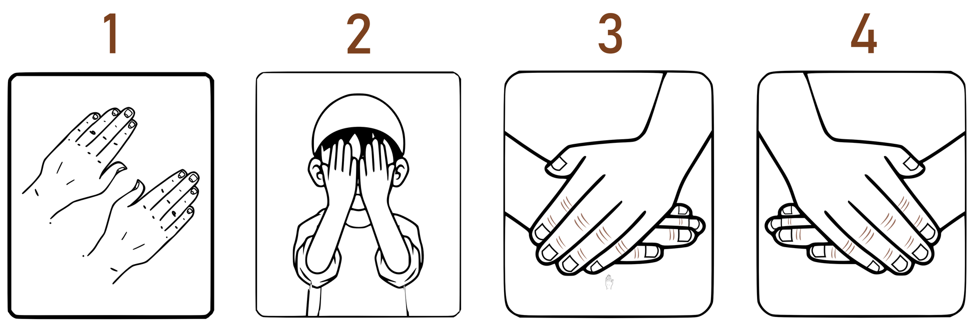

2

मिट्टी पर मारते समय उँगलियों को खोल कर रखना, एवं हथेलियों का मसह करते «पोंछते» समय इन का ख़िलाल करना, दोनों ही मशरूअ (विधान) नहीं हैं।

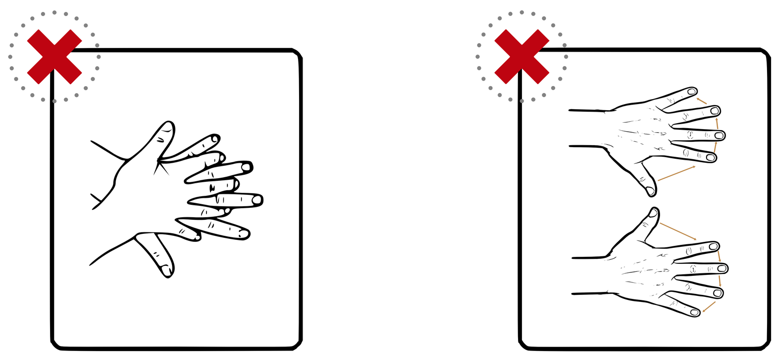

3

वाजिब ग़ुस्ल (अनिवार्य स्नान) का ढ़ंग व तरीका

मन में ग़ुस्ल करने की नीयत करे, फिर चुपके से बिस्मिल्लाह कहे, तत्पश्चात कुल्ली एवं नाक में पानी डालने सहित समस्त शरीर पर एवं हल्के एवं घने बालों के नीचे पानी पहुँचाए।

1

- ग़ुस्ल को वाजिब (स्नान को अनिवार्य) करने वाली चीज़ें :

1- जनाबत: जो कि संभोग इत्यादि के द्वारा वीर्य स्खलन से होता है, अथवा दो जननांगों (शिश्न एवं योनि) का मिलन मात्र हो तब भी स्नान अनिवार्य हो जाता है यद्यपि वीर्य स्खलन न हो। 2- मासिक धर्म रक्तस्राव और प्रसवोत्तर रक्तस्राव। 3- शहीद होने की स्थिति में न मरना। 4- काफिरों का इस्लाम लाना।

2

संकलन : डॉ. हैसम सरहान, शिक्षक मस्जिद -ए- नबवी एवं "मअहद अल-सुन्नह सुन्नत संस्थान : mahadsunnah.com" के पर्यवेक्षक।

कॉपीराइट और वितरण अधिकार उपलब्ध हैं। - ब्रोशर के अनुवाद के लिए : sarhaan.com पर जाएं अथवा बारकोड को स्कैन करें।